१.सिर्फ़ एक श्रीमन्नारायण को ही भगवान और परतत्व क्यों कहा गया है?
- किसी को भगवान कहना है तो उसमे निम्न बाते होनी चाहिये;
विष्णुपुराण में "भगवान" कि व्याख्या कीगयी है-

ऎश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ग्यानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा॥ (६।५।७४)

अर्थ- सम्पुर्ण ऎश्वर्य, सम्पुर्ण धर्म, सम्पुर्ण यश, सम्पुर्ण श्री, सम्पूर्ण ग्यान और सम्पूर्ण वैराग्य- इन छहोंका नाम 'भग' है। ये सब जिसमें हो उसे भगवान कहते हैं।

उत्पत्तिं प्रलयं चैव भूतानामागतिं गतिम।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति॥ (६।५।७८)

अर्थ- उत्पत्ति और प्रलयको, भूतोंके आने और जानेको तथा विद्या और अविद्याको जो जानता है, उसे 'भगवान' कहना चाहिये।

जब हम इन उपरोक्त बातों को देखते हैं तो ये सब बाते सिर्फ़ और सिर्फ़ एक श्रीमन्नारायण में ही मौजुद है, और किसी में नहीं। इसिलिये वे ही भगवान है। शिव, ब्रह्मा, गणेश, कालि, देविजी, साई बाबा, अम्मा भगवान ये सब कोइ भगवान नही है। ये सब भी जीव ही हैं।

-श्रीमन्नारायण ही मोक्ष दे सक्ते हैं और कोइ नही। परम शिव भक्त घंटाकरण को शिवजि मोक्ष नही दे सके।
-जो भगवान होते हैं वे कभि किसि से ठगे नहि जासकते, शिवजि को भस्मासुर ने ठग लिया।
-भगवान हमेशा अपने आश्रितों कि रक्षा करते हैं। रावण और कंस, ब्रह्मा और शिव के ही भक्त थे लेकिन वे उनको नही बचा सके और उल्टा उन्के मरने पर बहुत प्रसन्न हुए और भगवान पर सुमन वृष्टि किये।
-जो भगवान होता है उसे सही और गलत की पहचान होनी चाहिये। शिवजि और ब्रह्माजि राक्षसों को उटपटांग वरदान दे देते थे और बाद में पछताते थे।

एक बार भृगु रिषि ने परिक्षा ली की तीनों मे कौन बडा है और भगवान कौन है। वे ब्रह्मा के पास गये और उनका अपमान किया, ब्रह्माजि तुरंत क्रोधित हो गये। वे शिवजि के पास गये और उनको भी अपमानित किया, शिवजि भी क्रोधित हो गये। (इसका मतलब अपने भक्तों के

अपराध को माफ़ नहि किये)।
फ़िर वे विष्णु के पास गये और उनकि छाति पे लात मार दी वो भी तब जब वे लक्ष्मिजी के साथ एकांत में शयन कर रहे थे। लेकिन विष्णु भगवान क्रोधित नही हुए उल्टा वे भृगु मुनि के चरणों को अपने हाथों मे लिये और उनको सहलाये और पुछे कि कहीं आप के चरणों को लगी तो नही। ये है भगवान का दयालुपन।

इन सब उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है की श्रीमन्नारायण ही भगवान हैं।

शास्त्रों के प्रमाण:-

२. मनुष्यों को तो प्रणाम करते हैं फिर देवताओं को प्रणाम करने में क्या गलत है?
- मनुष्योंका प्रणाम व्यवहारिक होता है परमार्थिक नहीं। जैसे कोई लडकी किसी के बालक को हृदय से लगा लेती है तो उसके पतिव्रत भंग होने का डर नहीं रहता, परंतु वही लडकी उस बालक के पिता को हृदय से नहीं लगा सकती है क्योंकि उससे धर्म नष्ट होने का भय है। इसी प्रकार व्यवहारिक मनुष्यों के प्रणाम में अनन्यता भंग नहीं होती है परंतु दुसरे देवताओं को नमस्कार करने से अनन्यता भंग होती है।

३.सबमें अंतर्यामी भगवान विराजते हैं तो देवताओं में भी अंतर्यामी भगवान विराजते हैं, फिर उन्को नमस्कार करने में क्या हानी है?
- शास्त्रों में दो प्रकार के कर्म बताये गये हैं- १) मिश्रित- भगवान के साथ अन्य देवताओं की पुजा करना या देवताओं के अन्तर्यामी भगवान को नमस्कार करना।
२) शुध्द- सिर्फ़ भगवान की पुजा करना।
मिश्रित कर्म सामान्य अधिकारियों के लिये मान्य है लेकिन शरणागतों के लिये सक्त मना है और गीता के ९ वे अध्याय में भगवान ने स्वयं कहा है कि यह सेवा "अविधि पुर्वक" है। इसीलिये शरणागतों को सिर्फ़ शुद्ध सेवा ही करनी चाहिये।

४.देवताओं को छोडने से क्या हम उन्के द्रोही नहिं कहे जायेंगे? जैसे तुलसीदास कृत रामायण में लिखा है कि-

शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक मँह वास॥

-द्रोह तो देवतओं से क्या किसी से भी नहीं करना चाहिये। परंतु द्रोह किसे कहते हैं यह जानना

अवश्यक है। शास्त्रों में जहां एक निष्टा(अनन्यता) का प्रसंग आया है वहां दुसरों को छोडने का भी आया है। जैसे भगवान ने चरम स्लोक में भी "मामेकं" कहा है ।
- घंटाकरण अनन्य शिव भक्त था और अपने कान में घंटा पेहनता था जिससे उसके कान में विष्णु भगवान का नाम ना पडे। जब वो शिवजी से मोक्ष ना पाने पर विष्णु भगवान के पास मोक्ष के लिये गया तो भगवान ने उसे विष्णु द्रोहि नहीं माना क्यों की उसका प्रयोजन शिवजि की अनन्य भक्ति से था ना कि विष्णु से द्रोह करना।
-अःत जिसका जो अनन्य होता है सो दुसरों को छोडे बिना पुरा अनन्य नहीं कहा सक्ता। और नाहि वह किसी को छोड्ने पर द्रोहि कहा सकता है।

५.a) जब हर एक वैष्णव को नमस्कार करते हैं तो फिर शिवजि परम वैष्णव कहे जाते हैं, तो फिर उनको नमस्कार क्यों नहीं करना चाहिय? क्या इससे भागवत अपचार नहीं होगा?
- उर्द्वपुण्ड्र तिलक, गले में तुलसी और कमलाक्ष की माला, बाहुमुल में शंख-चक्र धारण करनेवाले को हि वैष्णव कहते हैं। लेकिन शिवजि के स्वरुप- वेश में ये एक भी चिन्न मौजुद नहीं है, इसीलिये शिवजि को नमस्कार नही किया जाता है। यदि कहीं पर भी वैष्णव वेश में शिवजि कि मुर्ति हो तो उसे नमस्कार कर सकते हैं , लेकिन सारे जगत में ऐसा कहीं पर नहीं है।

५.b) यदि शिवजि का वैष्णव वेश नही है तो फिर उनको वैष्णव क्यों कहा गया है?
- रिषि-मुनियों कि तरह श्राप- आशिर्वाद की शक्ति को पाने के लिये राक्षस, वैष्णवों का वेश धारण करने लगे। राक्षसों और मुनियों कि पहचान मुश्किल हो गयी। वैष्णव वेश धारण करने पर भी उन्होने राक्षसि प्रवृत्ती नहीं छोडि। उनके उपद्रव को रोकने के लिये भगवान विष्णु ने शिवजि को आग्या दी की आप वैष्णव वेश छोड कर पाखंड वेश(भस्म लगान, मुन्ड माल पहनना..) को धारण किजिये जिससे आपके भक्त राक्षस भी वैष्णव वेश छोड देंगे और उन्कि पहिचान भी हो सकेगि। इसीलिये शिवजि वैष्णव वेश धारण नहीं करते। इस प्रमाण को शिवजि ने खुद पार्वतीजी से कहा है और यह भी कहा है की मुमुक्षुओं को यह पाखंड वेश अपुज्य है। (reference- पद्म पुराण अध्याय-२३५ उमा महेश्वर संवाद)

६.ग्रामदेवता और कुलदेवता की कृपा हमारे गांव और परिवार पर रहति है, तो क्या उनकि पुजा नहीं करनी चाहिये?
- जब हमे यह एहसास हो जायेगा कि हमारी आत्मा नित्य है, शरिर नहि, तब हमे यह मालुम पड जायेगा कि श्रीमन्नारायण ही हम सबके अंदर अंतर्यामि रुप से **हर जगह और हर जन्म** में विराजते हैं। इससे कोइ अलग से ग्रामदेवता और कुलदेवता बनाने कि आवश्यकता नहि है। वे ही हमारे ग्रामदेवता और कुलदेवता है।

-अगर ग्रामदेवता और कुलदेवता कि कृपा का होना सही होता तो मीराबाई ने क्यों उनकि पुजा नहि की? उन्होने अपनी सास से स्पष्ट कह दिया कि मेरे गिरधर गोपाल ही मेरे कुलदेवता है।

७.अगर हमे सिर्फ़ श्रीमन्नारायण को ही पुजना है तो फिर ये सब देवता क्यो बनाये गये हैं?

- सब देवता भगवान के नौकर हैं और भगवान ने उनको ब्रह्मांड के विभिन्न कार्यों को करने के लिये बनाया है। जो भी कार्य वे करते हैं वो सब भगवान कि दी हुई शक्ति से ही करते हैं, नाकि अपने बल से।

८.अगर हमे सिर्फ़ श्रीमन्नारायण को ही पुजना है तो फिर शास्त्रों में देवी-देवताओं की पुजा करना क्यों बताया गया है?

- वेद एक बजार कि तरह है। जो जैसा अधिकारि है उसे वह वैसा मार्ग दिखाता है। जिन लोगों को अभि यह ग्यान नहि हुआ है कि श्रीमन्नारायण ही भगवान हैं वे लोग देवी-देवताओं की पुजा करते हैं। जैसे एक छोटा बच्चा अपने अग्यान वश बचपन में खिलौने के साथ खेलता है क्यों कि उसे यह पता नही की जीवन मे इससे भी बढीया चिजे हैं। लेकिन जब वो बडा होता है तो उसके साथ खेलना छोड देता है। उसी प्रकार जब हमें यह मालुम हो जाता है कि श्रीमन्नारायण ही मोक्ष दे सकते हैं तब हम भी देवी-देवताओं की पुजा करना छोड देते हैं।

९. जैसे एक पतिवृता स्त्री अपने पति के साथ परीवार वालों की भी सेवा करती है तो क्या हमे देवी-देवता जो भगवान के परीवार के समान है, उनकी सेवा नहीं करनी चाहिये?

- पतिवृता स्त्री अपने पति के साथ परीवार वालों की भी सेवा करती है लेकीन वो कभि पती के ओफ़िस के कर्मचारियों की सेवा नही करेगी। देवि-देवता भगवान के कर्मचारी हैं ना कि भगवान के परीवार के समान। भागवत , आचर्य और अम्माजि ही भगवान का परीवार है।

१०. मंत्रों के द्वारा, झाड-फ़ुक द्वारा रोग-आदि क्यों नहीं छुडाना चाहिये?

-

११. अगर हम गणेशजी की पुजा नहीं करेंगे तो क्या वे हमे विघ्न नही पहुंचायेंगे? मैने देखा है कि एक परीवार वाले किसी एक वैष्णव आचार्य से सुनकर गणेशजी की पुजा छोड दी, कुछ ही दिनों के बाद उनके यंहा मौत हो गयी। क्या ये गणेशजी की पुजा छोडने का दंड नही?

- सुख-दुख देना किसी देवादिक के हाथ में नहीं है। यदि विघ्न करना न करना उनके हाथ में होता तो खुदगणेशजी का एक दांत रावण ने उखाड लिया वह दांत फिर नहीं जमा और गणेशजी रावण का कुछ नहीं कर सके। यदि विघ्न करना उनके हाथ में रहता तो उसी वक्त रावण का नाश हो जाता।

- जब शिवजि ने उनका सिर काटा तो वे अपने आप को नही बचा सके और फिर हाथी का सिर लगाना पडा। इन सब बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जब गणेशजी अपने उपर आये विघ्नों को ही नही रोक सके तो दुस्रों को क्या विघ्न पहुंचायेंगे। सुख-दुख और पुजा-पाठ से कोई संबंध नही।

- और रही बात किसी की मौत होने की, वह तो ऐसा है की मौत आना किसी के हाथ मे नही। अगर हम ऐसा माने कि गणेशजी की पुजा नही करने से उनकी मौत हो गयी, तो फिर क्या हम यह मान ले की जो कोइ गणेशजी की पुजा करेगा उसे मौत नही आयेगी। ये तो मुर्खता की

१२.शास्त्रों में देवताओं को भगवान का शरीर बताया गया है और देवताओं के पुजने से फल प्राप्ति होना बताया है, तो फिर देवताओं को क्यों नहीं पुजना चाहिये?

-भगवान गीता में अर्जुन से कहते हैं

- कामनाओं से जिनका ग्यान नष्ट हो जाता है वे हमको छोडकर दुसरे देवताओं को भजते हैं और हमारी आग्या अनुसार देवताओं से फल भी पाते हैं। यद्यपि देवता लोग हमारे शरीर कहे गये हैं परन्तु देवों की सेवा से हमारी साक्षात सेवा नहीं है। इससे देवों की पुजा करनेवाले अल्पबुद्दि याने कम अक्ल वाले हैं।

-देवताओं द्वारा प्राप्त फल नाशवान होते हैं और जो मेरी अनन्य सेवा कर जो फल मिलता है वह नाशवान नही होता है।

-देवों को पुजनेवाले देवलोक जाते हैं और जन्म-मरण के चक्कर में पडे रहते हैं और मेरी सेवा करनेवाले मेरे अविनाशी परमपद को प्राप्त करते हैं और जन्म-मरण के चक्कर से छुट जाते हैं।

१३.श्री रुक्मिणीजी और श्री सीताजी ने पार्वतीजी की पुजा कि थी तो फिर दुसरों को करने में क्या हानी है?

- सीताजी का पार्वती की पुजा करना सो तो वाल्मीकीय रामायण में कहीं भी नहीं लिखा है और आदि काव्य भी वही है।(वाल्मीकीजी ने प्रत्यक्ष सब लीलाओं को दर्शन अनुभव कीया था और रामायण लिखी थी तो वही माननीय है, अन्य रामायण नहीं)।

- देवी के वरदान से भगवान का मिलना तो मजाक की बात है, तो भी नरलीला करने के लिये यदि देवी का पुजन किया तो भगवान ही के मिलने के लिये किया। आज दुनीयां में भगवान के मिलने के लिये ही देवी का पुजन करने वाली कोइ है क्या?(कोई नहीं)।

- श्री रुक्मिणीजी और श्री सीताजी ने पार्वतीजी(देवी) को पुजा था इस बात से यदि सारे संसार के स्त्री-पुरुषों को देवी पुजना चाहिये तो फिर इस बात को मीरा बाईजी ने क्यों नहीं माना? मीरा बाईजी ने देवी पुजने से स्पष्ट इनकार कर दीया। इससे शरणागतों को देवी की पुजा नहीं करनी चाहिये।

- श्री रुक्मिणीजी और श्री सीताजी साक्षत लक्ष्मीजी का अवतार थीं, एसा जरुरी नही कि जो कुछ

वे करी है(नरलीला के लिये) वो हम सब करे, क्यों की दोनों ने अग्नी परीक्षा भी दी थी तो क्या हम वो कर सकते हैं।

१४. जैसे प्रधानमंत्री से मिलने के लिये पहले MLA, MP की जरुरत पडती है वैसे ही भगवान से मिलने के लिये देवी-देवताओं की पुजा करना जरुरी है तभी हम भगवान से मिल सकते हैं।

- यह बात तो मनुष्यों(प्रधानमंत्री) के मिलने मे लागु हो सकती है क्योंकी मनुष्य अग्यानी होते हैं।परन्तु जो सारे ब्रह्मांड में हरेक जगह हर क्षण विराजमान हैं जिन्होंने द्रौपदी कि, गजेंद्र की रक्षा तुरंत की, जो सर्वत्र व्यापक हैं, सदा सर्वग्य हैं, उनसे मिलने के लिये दुसरों(देवी-देवताओं) के सिफारिश की जरुरत नहीं है।

१५.कई जगह लिखा है कि सब देव भगवान के अंग है। किसी का भी पूजन करे तो भगवान की ही पूजा है(सब भगवान एक हैं)। तो फिर देवी-देवताओं को क्यों नहीं पूजना चाहिए?

-गीता में भगवान अर्जुन से कहते हैं- जो दुसरे देवताओं को भजते पूजते हैं वह पूजा तो हमारी है प्रन्तु वह पूजा **<u>विधि पुर्वक नहीं</u>** है। विधि पुर्वक तो वही हो सकती है जिसमें खास मेरी ही पूजा हो।

-जब भगवान खुद देवताओं के द्वारा अपनी पूजा को विधि हीन बताते हैं तो फिर शरणागतों को अवश्य देवतांतर छोड्ना चाहिए।

१६.देवीजी और गणेशजी का व्रत(करवा चौत, गनगोर, शीतला माता की पुजा) करने से सोहाग बढता है। तो फिर उन्को पुजना कैसे छोड सकते हैं?

-सोहाग किसको कहते हैं यह बात लोग समझ ही नहीं पाते हैं।असली सोहाग तो श्री गोविन्द की शरणागति में है, सौभाग्य तो वही है जिसके सिर्फ़ श्री गोविन्द ही धनी है। बाकी लौकिक पती सम्बन्ध तो अनित्य है। दस बीस वर्ष आगे पीछे इस अनित्य पति सम्भन्ध का तो नाश अवश्य ही होने वाला है।

- हजारों स्त्रीयां प्रारब्धाधीन संयोग वियोग को नहीं समझती हुई, सोहाग के लिये देवीजी को कितने कष्ट सहकर पूजती है। तथा कितना कष्ट उठा उठाकर देवीजी का और गणेशाजी का व्रत करती हैं परन्तु उनमें बहुत सी सोहाग से जल्दी हीन हो जाती हैं(विधवा)।

- इससे अनित्य सोहाग के लिये अपने नित्य पती श्री गोविन्द गोपालकी अनन्य शरणागती नहीं छोडनी चाहिए।

१७. सब लोग कहते हैं कि ब्रह्माजी ही इस जगत के रचयिता हैं तो फिर आप कैसे कह सकते हैं कि श्रीमन्नारायण ही भगवान और रचयिता है?

-दो प्रकार की सृष्टि होती है: १) **अद्वारक** २) **सद्वारक**
अद्वारक सृष्टि उसको कहते हैं जो लक्ष्मीपती याने परब्रह्म से होती है।(श्रीमन्नारायण ही परब्रह्म है, इसका खुलासा पहले प्रश्न में हो चुका है)। वे कुछ मुल वस्तु बना देते हैं पश्चात देवों को रचते हैं फिर उनमें शक्ति, ग्यान प्रदान करते हैं, सृष्टि का तरीका बता देते हैं और अन्तर्ध्यान हो जाते हैं।
फिर देवों के द्वारा जो सृष्टि होती है उसी का नाम सद्वारक सृष्टि कहते हैं। यह स्वतन्त्र रचना नहीं है किन्तु भगवान की दी हुई शक्ति से है। इसीसे सद्वारक सृष्टि करनेवाले मूल कारण, मूल रचयिता नहीं कहे जाते।
-जैसे- सोने की रचना भगवान ने की आभुशण की रचना सुनार ने की।लोहे की रचना भगवान ने की, चाकू की रचना लोहार ने की।
-जैसे एक लडके से उसके मां -बाप के बारे में पुछने से वह कहता है की मां का नाम श्यामा और बाप का रामू। उसके कहने से तो रामू- श्यामा उसके मां-बाप हुए परन्तु ये दोनों उसके असल निर्माता नहीं है। क्योंकि मां का गर्भाशय, मां का दुध ये सब मां का बनाया नहीं है किन्तु सब भगवान ने रचा है।
रामु और श्यामा भले ही उस बच्चे के मां-बाप कहलाते हैं परन्तु असली मां-बाप तो भगवान और लक्ष्मीजी ही हैं
- बस इसी प्रकार मूल सृष्टि कर्ता भगवान को समझना चाहिए और उनकी दी हुई शक्ति से ब्रह्म, शिव, देवी वगैरह ने अन्य रचना की है एसा समझना चाहिये।

१७. कहीं लिखा है और TV में भी देखा है कि शिव ही से विष्णु हुए। देवीजी ही को विष्णु का कारण बताया है, तो फिर आप कैसे कह सकते हैं की विष्णु ही सबको रचनेवाले भगवान हैं?
- भगवान(विष्णु) बडे कृपालु हैं, चाहे जहां से प्रगट हो सकते हैं: चाहे जिसको बडाई दे सकते हैं। क्या किसी के नजदीक से क्रीडा के निमित्त प्रगट होजाने से क्या वह भगवान का कारण बन सकता है? कदापि नहिं। श्री दशरथजी को भगवान ने बाप बनाया तो क्या वे भगवान के कारण हो सकते हैं? कदापि नहीं।
- यदि भगवान का कारण देवी होती तो उसे मीराजी क्यों छोड देती? विष्णु के कारण यदि शिवजि होते तो घन्टाकर्ण को मुक्ति क्यों न देते? इससे यह जानना चाहिए कि ये सब उपर की बातें गलत हैं।

१८. यदि " ब्रह्मा विष्णु महेश" तीनो एक नहीं है तो ऐसी तीनों की एक साथ गणना क्यों की जाती है?
- एक पँक्ति में गणना होने से क्य ब्रह्मा और शिव भगवान के बराबर हो सकते हैं? कदापि

नहीं क्योंकि रघुकुल की गणना में अज, दशरथ, राम, लव कुश एसी गणना होती है। तो क्य एक पँक्ति में गणना होने से श्रीरामजी के बराबर अन्य रघुबंशी हो सकते हैं?
- भगवान विष्णु(त्रिविक्रम) ने चरण फैलाया, ब्रह्माजी ने कमंडलु में उसे धोया, शिवजी ने साष्टांग दंडवत करके अपने कल्याणार्थ उस चरणामृत को अपने मस्तक जटा में धारण किया। चरण धोनेवाले और चरणामृत लेनेवाले उनके अनुचर ही हो सकते हैं। इससे भगवान विष्णु ही तीनों में बडे हैं। तीनों एक नहीं हैं।

१९. **वैष्णव लोग क्या अपने घर पर सत्यनारायण भगवान की पुजा करा सकते हैं?**
- सत्यनारायण भगवान की पूजा और उनकी कथा पूर्ण रुप से सकाम मनोरथों के लिये होने से श्री वैष्णवों को नहीं करनी चाहिए। सत्यनारायण भगवान के चित्रपट में भी सकाम अनुष्टान का दर्शन होता है, इससे उसको भी सेवा में नहीं रखना चाहिए।

२०. **श्री वैष्णव क्या हनूमानजी के मंदिर जा सकते हैं?**
- श्री हनूमानजी भगवान के परम आप्त और परम प्रिय भक्त हैं। हनुमानजी कदापि यह पसंद नही करते हैं कि कोई उनके भगवान श्रीरामजी को छोड कोई उनको ही भगवान माने। अर्थात जहां कहीं भी भगवान को छोड सिर्फ़ हनुमानजी की स्तापना की गयी होय, ऎसे मन्दिरों में वैष्णवों को नहीं जाना चाहिए क्योकि ज्यादातर ऎसे मन्दिर सकाम मनोरथों के लिये ही बनाये जाते हैं।
- भगवान की सन्निधि में जहां कहीं भी हनुमानजी विराजते हैं उनको वहां पूर्ण भाव से आदर से प्रेम से नमस्कार अवश्य करना चाहिए।

२१. देवी-देवताओं की पूजा छोडना क्यों जरुरी है? हम मन में श्रीमन्नारायण को ही मुख्य भगवान मानते हैं और साथ ही साथ दुसरे देवताओं को भी पुजते हैं तो क्या गलत है?
२२. आप जो कहते हैं कि देवी-देवताओं की पुजा नहीं करनी चाहिये, प्याज-लहसुन नही खाना चाहिये, ये सब सही है, परंतु मैं इसका पालन अभी नही कर सकता? इसका पालन आगे बडि उम्र मे कर सकते हैं न?
२३.रामेश्वर मे रामजी ने शिवलिंग की पुजा की थी, तो आप कैसे कह सकते हैं की शिवजी को नही पुजना चाहिये?
२४.भगवान से हमारा बाप-बेटे का संबंध है, तो फिर हम भगवान से क्यों नही मांग सकते हैं?
२५.देवी-देवताओं की पुजा करने से हमारे सभी काम और मनोरथ पुरे हो जाते हैं, लेकिन भगवान हमारी मनोकामनायें जल्दि पुरी नहीं करते हैं। इस लिहाज से तो देवी-देवताओं की पुजा करना अछा है, तो फिर उनको क्यों छोडना चाहिये?

२६.तीलक क्यों लगाना चाहिये? इसको लगाने से क्या फायदा है?

२७. श्रीपाद तिर्थ और त्रिविडि किसे कहते हैं? इनको रोज क्यों लेना चाहिय़े?

२८. देवतांतर किसे कहते हैं?

२९. उपायांतर किसे कहते हैं?

३० प्रयोजनांतर किसे कहते हैं?

३१. विषयांतर किसे कहते हैं?

३२. स्वामीजी से शंख- चक्र लेना क्या जरूरी है?

३३. मेरे ससुराल मे सभी देवि-देवताओं की पुजा होती है, तो फिर मै वैष्णवता का पालन कैसे कर सकती हुँ?

३४. आप कहते हैं की बच्चों को वैष्णवता सिखाइये लेकिन हमारे बच्चे हम से कहते हैं कि मम्मी मैं तो अभी छोटा हुँ, मेरी यह उम्र नही है पुजा-पाठ करने की, आपको करना है तो किजिये मुझे मत कहिये। मुझे तो अभी बहुत Enjoy करना है Life में। गौर किया जाय तो बच्चों की बात भी ठिक ही है क्यों की अभी तो उनको Enjoy करना चाहीये, पुजा-पाठ और वैष्णवता आगे बडे होने पर भी कर सकते हैं ना?

३५.आप कहते हैं कि मंत्रो के द्वारा रोगादि को नही छुडाना चाहीये लेकिन कुछ रोग जैसे सर्पणी(नागिनि-Herpes infection), या भुत-प्रेत का सताना, नज़र लगना, इन सब में औशदीयां काम नही आती है। ये सब रोग मंत्रों के द्वारा ही दुर हो सकते हैं। अगर हम आपकी बात मानकर मंत्र नही पडायेंगे तो क्या उसको हानी नही पहुँचेगी?

३६.